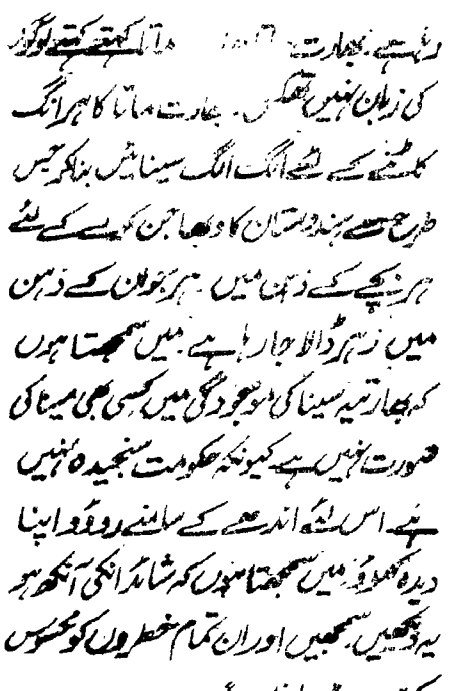

DR. BIPLAB DASGUPTA (West Bengal): Madam, with your permission, may I make a submission? While associating myself with what Shri Janeshwar Misra has said, I would like to make one point. Dr. Malkani has said that this Shankara Charya is a Congress Acharya. I don't know if the Acharyas are not subject to the anti-defection law. They also keep on changing the parties. Today he is a Congress Acharya, Tomorrow he may be a BJP Acharya. After some time, he may be an Acharya of some other party. It is just like the political personalities in our country.

SHRI K. R. MALKANI: Madam, a renowned Marxist leader belonging to West Bengal is also a disciple of Chandra Swamy.

SHRI S. VIDUTHALAI VIRUMBI: Sir, the Shankaracharya of Kanchi has opened the RSS office in Tamil Nadu.

†[ ]Transliteration in Arabic Script.

Harassment of Shri Vishnu Prabhakar, A Renowned writer and freedom fighter

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार) : उपसभापति जी, मैं एक बहुत ही गम्भीर विषय की ओर सरकार का और सदन का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं और चाहता हूं कि मैडम आप इस गम्भीर मसले का निश्चित रूप से महसूस करते हुए सरकार को कुछ डायरेक्शन दें।

उपसभापति महोदय, कोई भी राष्ट्र केवल राजनेताओं से नहीं चलता है और न किसी पद से चलता है। राष्ट्र यदि चलता है तो उसकी महिमा और इतिहास, उसकी संस्कृति यदि बनती है और अक्षुण रहती है तो उसकी संस्कृति से, उसके इतिहास से, उसके कलाकारों से, उसके साहित्यकारों से। रूस में न जाने कितनी सत्ताएं आई गई लेकिन टालस्टाय और गोरकी का नाम आज भी अमर है। फ्रांस में कोई नहीं जानता कौन सत्ता में आता है और कौन चला जाता है लेकिन अनातोले फ्रांस और वाल्टेयर को हर कोई जानता है। उसी तरह से अरब कंट्रीज में तरह तरह की बातें अपनी जगह पर हैं खलील जिबरान ने पूरी दुनियां में जो नाम ऊंचा किया है, हर आदमी उन बातों को जानता है। यूनान आज मिट चुका है लेकिन आज भी यूनान को हर जगह दुनिया में कोट किया जाता है सोक्रेटीज अरिस्टोटल और प्लेटो के नामों को सामने रखते हुए। मैं जिन बातों की ओर सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं, महोदया, मुझे दुख: के साथ कहना पड़ता है कि इस दिल्ली नगर में प्रेम चन्द और जैनेन्द्र की परम्परा का सब से बड़ा हिन्दी साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर जिनकी उम्र 84 वर्ष है, जिनको राष्ट्र का सब से बड़ा और सर्वोच्च पुरुस्कार और सम्मान मिल चुका है, उस व्यक्ति के साथ जिस तरह की ज्यादती हो रही है: मैं समझता हूं कि सरकार अविलम्ब उसमें ध्यान दे। विष्णु प्रभाकर जी एक बहुत बड़े उपन्यासकार कहानीकार के अतिरिक्त स्वतंत्रा संग्राम सेनानी,

गांधीवादी विचारक और चिंतक हैं । 84 वर्ष की आयु में उनकी हालत यह है कि उन्होंने जो पुरस्कार की राशि उन्हें मिली और जो लेखन की रायल्टी मिली उससे एक घर बनाया । उस को उन्होंने किराये पर दिया । जो आदमी उस किराए के मकान में रहता है उससे बात की, उसने कहा कि हम छोड़ देंगे । न मकान छोड़ रहा है न किराया दे रहा है और असामाजिक तत्वों का अड्डा बनाए हुए है। विष्णु प्रभाकर जी ने इस बात के लिए प्रधान मंत्री जी को खत लिखा, राष्ट्रपति जी को खत लिखा, मुख्य मंत्री जी को खत लिखा । उसके ऊपर एक एस0एच0 ओ0 एक दिन उनके घर गए । एस0एच0 ओ0 के जाकर उनको धमकी दी । बार बार उनसे यह कहा आपको जो कुछ करना है राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री से करा लीजिए लेकिन कुछ नहीं होगा । यह मैं आपको बताना चाहता हूं ।

SHRI S. VIDUTHALAI VIRUMBI (Tamil Nadu): Madam, at least the the Minister should also hear what the hon. Member says. You please tell the Minister. He is talking about a freedom fighter and nobody is hearing.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The Minister of State for Home is here... (*Interruptions*)...

श्री शंकर दयाल सिंह : इकबाल सिंह जी और राजेश पायलट जी से कहूंगा कि इस बात को सुने । मैं कह रहा हूं... (व्यवधान)

SHRI P. M. SAYEED: There was a question on this in this House today. (*Interruptions*)...

श्री शंकर दयाल सिंह : नहीं नहीं, इसके बारे में नहीं था ।

एस०एच०ओ० ने जाकर श्री विष्णु प्रभाकर को धमकाया, जिसके बारे में उन्होंने लिखा। विष्णु प्रभाकर जी का थाने में लिखा हुआ है उसको मैं पढ़ रहा हूं—

"आपको खूब याद होगा कि कुछ दिन पहले आप मेरे बेटे अतुल कुमार के निवास स्थान कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली पर तशरीफ लाए थे । मैं उसी के साथ रहता हूं । आपके पास मेरा वह निवेदन-पत्र था जो मैंने महाराणा प्रताप एन्कलेव, पीतमपुरा में जो मैंने मकान बनाया है, मकान बी-151 के संबंध में महामहिम राष्ट्रपति जी तथा दिल्ली के मुख्य मंत्री जी को लिखा था।"

आपने पूछा, "ये पत्र आपने लिखा है ?"

मेरा उत्तर था, "जी हां।"

तब आपने कहा, "कुछ नहीं होगा।"

आपने कुछ और भी कहा था जो मैं लिख नहीं सकता । हां, एक बात कही थी आपने कि "आपने इसमें यह भी लिखा है कि मेरे मकान में रहने वाले किराएदार की पुलिस से सांठ-गांठ है ?"

मेरा उत्तर था, "जी हां, मुझे ऐसा ही लगता है ।"

महोदया, इस 84 साल के व्यक्ति ने प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति जी को पत्र लिखते हुए, राष्ट्रपति जी के पत्र में लिखा—एस०एच०ओ० को जो पत्र लिखा था, आखरी अंश और यहां पढ़ता हूं । उन्होंने लिखा कि—

"जाने दीजिए, आपको दोष देने से क्या लाभ होगा । दोष तो हमारा यानी जनता का और जनता की सरकार का है । उसी की सजा, मेरे जैसे आदर्शवादी व्यक्ति भोग रहे हैं। मरणासन्न पत्नी की इच्छा पूरी करने के लिए घोर परिश्रम करके और पुरस्कार तथा रायल्टी के एक एक पैसे से अपना मकान बनाया । इसमें पाप की एक ईंट भी नहीं लगी है। लेकिन परिणाम आपके सामने है ।

आपने केवल वे दो शब्द कहे थे तो मैं इतना कुछ लिख गया । गांधी जी के प्रभाव में पला हूं मकान चला भी जाए तो दुख नहीं मानूंगा लेकिन जिंदगी के उसूलों को मैं नहीं छोड़ूंगा ।"

महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं... (व्यवधान) मेरी बात सुन लें । राष्ट्रपति जी को लिखा केवल एक

वाक्य कहना चाहता हूं, "मेरे साथ अब जो होगा", चूंकि पुलिस अफसर ने धमकाया कि आप जाइएगा राष्ट्रपति जी के पास, प्रधान मंत्री के पास और मुख्य मंत्री के पास तो समझ लीजिएगा कि क्या होगा, "मेरे साथ तो अब जो होगा उसे मुझे भुगतना ही होगा । इस जन्म में तो उस मकान में पैर नहीं रख पाऊंगा । कहानी बड़ी लम्बी है । अब वह मेरे उपन्यास, अगर मैं जिंदा रहा तो, "भ्रष्टाचार का दावानल" में ही आएगी । 83 वर्ष के इस बूढ़े को केवल दो रोटी खाने के लिए इस उम्र में भी 8 घंटे रोज काम करना पड़ता है । इससे मैं दुखी नहीं हूं बल्कि मुझे अपने पर गर्व है ।

मैंने जो कुछ लिखा है वह किसी के प्रति दुर्भावना से नहीं लिखा । लिख भी नहीं सकता था । लेकिन सच्चाई का कुछ अंश तो सामने आना ही चाहिए ।"

महोदया, मैं आपसे बहुत अर्ज के साथ कहना चाहता हूं कि यह वही दिल्ली है जिसमें अमीर खुसरो पैदा हुए, गालिब पैदा हुए और मीर पदा हुए । यही दिल्ली है जहां अभी जैनेन्द्र कुमार और अज्ञेय जैसे बड़ साहित्यकार हुए । मैं एक ही बात कहना चाहता हूं कि हम लोग तो सब अनेक तरह की बातें करते हैं, लेकिन एक इतना बड़ा साहित्य कार जो गांधीवादी मूल्यों को ले करके जिंदा रहा आजादी की लड़ाई में जिसने अपने को जेल में रखा और सारी यातनाएं सही, वह आदमी एक मकान जो बनाया किरायेदार मकान छोड़ता नहीं, किराया देता नहीं है और जब कोर्ट भी फैसला नहीं देती है तो पुलिस से सांठ-गांठ करके किरायेदार इसी को आ करके धमकी देता है । मैं इस बात को ज्यादा नहीं बढ़ाते हुए केवल यही चाहता हूं सरकार से क्योंकि यहां पर राजेश पायलट जी हैं, तीन-चार बातें करें । एक तो यह कि जो उनको जाकर धमकाया है, थ्रैट दिया हुआ है इसकी छान-बीन होनी चाहिए और उसको सजा मिलनी चाहिए । दूसरा, जो असामाजिक तत्व का व्यक्ति है, इसमें लिखा है कि गुंडों को उस मकान में रखता है, उससे मकान खाली करवा कर, इतने बड़े साहित्यकार को कब्जा दिलवाना चाहिए । तीसरा यह कहना चाहता हूं कि उनकी जान को सुरक्षा देनी चाहिए क्योंकि उस किराएदार ने असामाजिक तत्वों के द्वारा एस०एच०ओ० ने सब ने उनको धमकाया है, इसलिए मैं आपसे अर्ज करुंगा कि उनको सुरक्षा मिलनी चाहिए । अंतिम में यह कहना चाहूंगा कि चूंकि मंत्री जी यहां पर बैठे हुए हैं, आज ही उनको तहकीकात कर लेनी चाहिए । मैं चहता हूं कि सारा सदन इससे अपने को सम्बद्ध करे इसलिए कि यह मामला एक ऐसी शख्सियत का मामला है जिसने आज तक अपनी जिन्दगी में सूखी रोटी खा करके भी अपने मूल्यों की हिफाजत की और जो कुछ उस आदमी ने लिखा उससे देश का, राष्ट्र का गौरव हुआ । "आवारा मसीहा" जैसी पुस्तक उस आदमी ने बंगला के सब से बड़े या राष्ट्र के सब से बड़े उपन्यासकार शरत चन्द्र के ऊपर लिखी तो दुनियां के हर मुल्क से उसके पास खत आए और हिन्दी में लिखी उस किताब का हिन्दुस्तान की हर भाषा में अनुवाद हुआ । बंगला में लोगों ने बुला करके उनको यह रवीन्द्र पुरस्कार से उनका अभिषेक किया । आज अगर ऐसे साहित्यकार का इस दिल्ली में जो इस तरह का अपमान होता है तो हम लोग अपने आपको सम्मानित नहीं अनुभव कर सकते हैं । महोदया, मैं चाहूंगा कि इसको सरकार गंभीरता से ले और आपने इस बात को यहां पर उठाने का मौका दिया इसलिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री संघ प्रिय गौतम : मैडम, मारा सदन इससे सहमत है ।

श्री राघवजी (मध्य प्रदेश) : महोदया, डा० विष्णु प्रभाकर, एक महान साहित्यकार इस देश के लिए गौरव का विषय है ।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी (उत्तर प्रदेश) : मैडम, जो वेदना और जो विचार और सुझाव शंकर दयाल सिंह जी ने व्यक्त किए हैं मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं । मैं श्री विष्णु प्रभाकर जी को पिछले 25 साल से जानता हूं । आत्म ज्ञापन से दूर, किसी प्रकार के किसी छल-छद्म से वे दूर रहते हैं और जिस

दुरव्यवस्था के वह इस समय शिकार हुए है मैं समझता हूं कि उसकी ओर तुरन्त ध्यान दिलाना चाहिए । उनका जो इस देश को योगदान है वह मैं समझता हूं कि बहुत महान है । उनका व्यक्तित्व महान है । समय बहुत अधिक हो गया है और बहुत ही अच्छे शब्दों में शंकर दयाल सिंह जी ने अपने विचार रख दिए हैं, मैं आपके माध्यम से केवल यह निवेदन करना चाहूंगा हमारे दोनों गृह मंत्री यहां पर उपस्थित हैं, उन्होंने जो सुझाव दिए हैं उसके ऊपर तुरन्त कार्यवाही होनी चाहिए और प्रभाकर जी आज की इस दुरव्यवस्था से राहत मिलनी चाहिए ।

श्री राघवजी : आश्वासन दें ।

श्री संघ प्रिय गौतम : मैडम, मंत्री जी घोषणा करें ...(**व्यवधान**)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : इस पर गृह मंत्री जी कुछ कहें...(**व्यवधान**) कानून का राज है, पुलिस का राज नहीं है ।...(**व्यवधान**) जो शंकर दयाल सिंह जी ने कहा है हम सभी उससे अपने को सम्बद्ध करते हैं ।

उपसभापति : गृह मंत्री जी को कुछ आश्वासन...(**व्यवधान**) गृह मंत्री जी, आज पीछे बैठे हैं । दूसरे हैं ।

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राजेश पायलट) : महोदया, भाई शंकर दयाल सिंह जी ने आज जो जिक्र किया सरकार इस बात से बहुत चिंतित है । हमें ऐसी शिकायतें पहले भी जब मिलीं सरकार ने कदम उठाए । मैंने पहले भी जिक्र किया था कि जिससे ये सारी बातें आती रहें कि एक कमेटी हमने सीनियर सीटीज़ंस की पुलिस के साथ बनाई । सीनियर सिटीज़ंस और उनके रेगुलर ओपन हाउस भी हमने कराने की कोशिश की है हर तीन महीने में और मेरे साथी मि० मईद वह जो दिल्ली पुलिस लुक आफ्टर कर रहे हैं वह इसे मॉनिटर कर रहे हैं कि हर तीन महीने में ओपन हाउस हो । हर ए०सी०पी० पब्लिक से सीधे मिले जिससे कि ये तकलीफें दूर हो सकें । लेकिन फिर भी शंकर दयाल सिंह जी ने कहा है इस पर आवश्यक कार्यवाही करके शाम तक शंकर दयाल सिंह जी को बताऊंगा और उनके खिलाफ कार्यवाही ले कर तभी मैं सोऊंगा जब शंकर दयाल सिंह जी कह देंगे कि मैं इससे सन्तुष्ट हूं ।

श्री शंकर दयाल सिंह : बहुत अच्छा ।

उपसभापति : बहुत अच्छा. आपने आश्वासन दिया, आप उस पर जरूर अमल कीजिए क्योंकि वह सिर्फ एक सीनियर सिटीजन ही नहीं हैं बल्कि एक फ्रीडम फायटर भी हैं और आज सुबह ही माननीय सदस्य मलकानी जी ने एक फ्रीडम फायटर का जिक्र किया जोकि हमारे पड़ोसी मुल्क में रह रहे थे । उनकी वहां जो दुर्दशा हुई और जिस हालत में उनका देहांत हुआ, उनको जेल में रखा, उनका कुछ इलाज नहीं हुआ और वह गुजर गए । इस पर हम लोगों ने चिंता प्रकट की और अफसोस भी जाहिर किया । अब हालांकि हम अपने फ्रीडम फायटर्स की बहुत इज्जत करते हैं, उनको सम्मानित करते हैं और उन्हें जो ताम्र-पत्र वगैरा बराबर देते हैं, लकिन वह एक-एक करके जा ही रहे हैं और कुछ रह गए हैं तो जितनी भी उनकी तकलीफें हैं, उनकी जो समस्याएं हैं, उन पर हमें जरुर ध्यान देना चाहिए । इसलिए आपका इस हाउस की तरफ से धन्यवाद कि आप इस बात पर अमल करेंगे ।

अब चूंकि बहुत देर हो गयी है, दो स्पेशल मेंशंस रह भी गए हैं, वह लंच के बाद लेंगे ।

I adjourn the House for one hour for lunch.

The House then adjourned for lunch at forty-two minutes past one of the clock.

The House reassembled at forty-three minutes past two of the clock. **The vice-chairman (Miss Saroj Khaparde)** in the Chair.